

इकाई — चार कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत

---

संरचना

4.1 परिचय

4.2 उद्देश्य

4.3 नैतिक विकास की अवधारणा

4.3.1 बालक की विभिन्न अवस्थाओं में नैतिक विकास

4.3.1.1 भौतिक अवस्था में नैतिक विकास

4.3.1.2 बाल्यावस्था में नैतिक विकास

4.3.1.3 किशोरावस्था में नैतिक विकास

4.3.2 नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

4.3.2.1 परिवार

4.3.2.2 विद्यालय

4.3.2.3 बौद्धिक विकास

4.3.2.4 साथी समूह

4.3.2.5 यौन व्यवहार

4.3.2.6 मनोरंजन संबंधी कारक

4.3.2.7 समाज और संस्कृति

#### 4.4 कोहलबर्ग का नैतिक विकास के स्तर का वर्णन

##### 4.4.1 कोहलबर्ग द्वारा बनाये तीन स्तर

##### 4.4.2 नैतिक विकास स्तर का चित्र

##### 4.4.3 पूर्व नैतिक स्तर

#### 4.5 कोहलबर्ग की छः अवस्थाओं का वर्णन

##### 4.5.1 प्रथम अवस्था—विकास की पूर्व परम्परागत स्तर

##### 4.5.2 द्वितीय अवस्था— विकास का परम्परागत स्तर

##### 4.5.3 परम्पराओं को धारण करने वाली अवस्था

##### 4.5.4 तृतीय अवस्था— अच्छे लड़की/लड़के का अभिमुखीकरण

##### 4.5.5 आधारहीन आत्म चेतनावस्था

##### 4.5.6 चतुर्थ अवस्था – नैतिक तर्क का उच्चतम स्तर

##### 4.5.7 आधारयुक्त आत्मचेतना अवस्था

##### 4.5.8 पंचम अवस्था— विकास का पंचम—परम्परागत स्तर

##### 4.5.9 षष्ठम् अवस्था— नैतिक विकास की पराकाश्टा

##### 4.5.10 उदाहरण

#### 4.6 कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत की आलोचना सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में

##### 4.6.1 लिंग भेद

#### 4.6.2 सांस्कृतिक अंतर

#### 4.6.3 विचार क्रिया समस्या

#### 4.7 भारतीय सामाजिक संस्कृति सेंटिंग में नैतिक विकास

#### 4.8 इकाई सारांश— याद रखने योग्य बातें

#### 4.9 अपनी प्रगति की जांच करें

#### 4.10 अपनी प्रगति की जांच संबंधी उत्तर

#### 4.11 नियत कार्य/ गतिविधियाँ

#### 4.12 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

##### 4.12.1 चर्चा के बिन्दु

##### 4.12.2 स्पष्टीकरण के बिन्दु

#### 4.13 संदर्भ

---

### 4.1 परिचय

---

मानवीय क्रियाकलापों को निर्देशित करने वाला विवास, मूल्य, रीति-रिवाज, लोकरीति, सकारात्मक व्यवहार और सिद्धांत ही नैतिकता कहलाते हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने नैतिक विकास के भिन्न-भिन्न तरीके प्रस्तुत किये हैं। नैतिकता के उदय और विकास के बारे में बिल्कुल अलग विचार दिए हैं कि बालक जब जन्म लेता है तो उसका मस्तिष्क कोरे स्लेट की तरह होता है, उसमें कोई जन्मजात नैतिक संवेग नहीं होते। सभी प्रकार की नैतिकता का कोई जैविक आधार नहीं है। अन्तःकरण और निर्णय से प्रेरित होता है नैतिकता केवल वह व्यवहार है जो पुरस्कार से उन्नत होता है। और दण्ड से नियंत्रित होता है, परन्तु वर्तमान काल में सामाजिक नियमों और व्यक्तित्व व्यवहार में

संघर्ष उत्पन्न है, जिससे नैतिक मूल्य, वि वासों का बालकों में हास होने लगा है। हमें प्रयास करना है कि बालकों में नैतिक मूल्य, वि वास, संस्कारों को विकसित किया जा सके।

---

## 4.2 उद्देश्य

---

इस इकाई से गुजरने के बाद हम योग्य है :-

- नैतिक विकास का अर्थ समझने में ।
- बालक की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में नैतिक विकास की जानकारी ।
- कोहलबर्ग के नैतिक विकास के स्तरों की व्याख्या करने में ।
- कोहलबर्ग के सिद्धांत के नैतिक विकास की आलोचना सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में ।
- विविध भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक सेटिंग को समझना ।

---

## 4.3 नैतिक विकास का संप्रत्यय

---

नैतिकता का तात्पर्य सामाजिक समूह के नैतिक नियमों को स्वीकार करने से है। बच्चों में विकसित होने वाला नैतिक व्यवहार, वि वास, मूल्य और सिद्धांत ही उनके माता-पिता तथा पारिवारिक परिवेश की देन है।

वील्ड ने नैतिकता के बारे में कहा है— “नैतिकता का अर्थ उपदेष्टा, आचरण संहिता, सही-गलत, नैतिक आचरण तथा चरित्र आदि से है। इसका अर्थ यह भी है— आचरण के सही नियमों का पालन, नैतिक उत्कृष्टता तथा गुण विशेष रूप से यौन व्यवहार में भालीनता।”

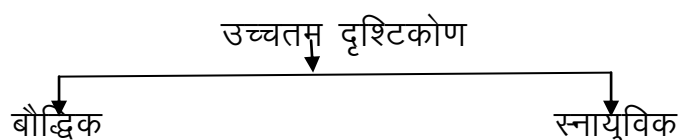
### नैतिक विकास की अवधारणा :-

नैतिक विकास अवधारणा का विकास आवश्यक पहलू है जब हम सही/गलत की बात करते हैं, तो हम यह मान लेते हैं कि यह भावात्मक विचार है। भावात्मक अवधारणाओं को ग्रहण करने तथा समझने के लिए यह आवश्यक है कि मानसिक तथा भाषाई परिपक्वता में संतुलन हो। अवधारणा के विकास का संबंध बालक की बुद्धि उसके संवेगिक विकास, सांस्कृतिक, सामाजिक वातावरण

एवं उसकी प्रकृति से उत्पन्न गुणों का प्रभाव पड़ता है। निः स्वार्थ भावना का विकास स्वार्थी भावना—युक्त, आत्म केन्द्रियता, सामाजिक केन्द्रियता का अनुपालन, सामाजिक अस्वीकृति का भय तथा पारस्परिक—अनुक्रिया द्वारा होता है।

नैतिकता सामाजिक नियंत्रण का साधन है। सम्मत व्यवहार तथा आदों का सम्मिलित रूप ही नैतिकता का स्वरूप धारण करता है। समाज के आदों के प्रति स्वेच्छा से आचरण करना इसका ध्येय है। बाहर से अन्दर की ओर अधिकार की पुष्टि ही इसका ध्येय है। भय न होकर मर्यादा में रहकर स्वेच्छा से नियमों का पालन करना ही आचरण का आधार है। व्यक्ति की भावनायें कार्य से जुड़ जाती हैं। किसी कार्य को करते समय व्यक्ति यह सोच लेता है कि वह कार्य अनैतिकता तो नहीं सच्ची नैतिकता जटिल होती है।

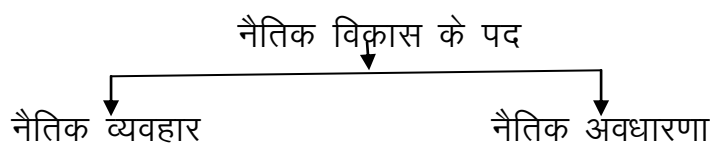
नैतिकता में दो प्रकार का उच्चतम दृष्टिकोण निहित होता है



व्यक्ति को यह जानना आवश्यक हो जाता है कि वह यह जाने कि क्या सच है और क्या झूठ। क्या गलत है और क्या सही। साथ ही उसमें यह भावना भी विकसित होनी चाहिये कि वह सही कार्य और कार्य से बचे।

नैतिक व्यवहार अर्जित किया जाता है। यह संचेतना परिवार में विकसित होती है। यही कारण है कि परिवार में यदि कोई बालक विपरीत आचरण करता है तो यह समझा जाता है कि परिवार इसके लिए उत्तरदायी है। ऐसी धारणा वाले व्यक्तियों का यह भी विवास होता है कि ऐसे बालकों को सुधारा नहीं जा सकता। भावनात्मक दण्ड द्वारा ऐसे बालकों को नैतिकता को मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया जाता है। किन्तु ऐसी धारणा वाले व्यक्ति यह भूल जाते हैं कि बालक में अच्छे तथा बुरे की धारणा का विकास नहीं होता। उनसे धीरे-धीरे सामाजिक सम्पर्क के कारण ही नैतिक मानदण्डों तथा उसकी आवश्यकताओं का ज्ञान होता है। कोई भी बालक अपना स्वयं का नैतिक आचरण विकसित नहीं कर सकता। सामाजिक आचरण का अनुपालन एकदम नहीं हो पाता, इसके

लिए सतत् प्रयत्न, नैतिक शिक्षा और समय की आवश्यकता है। बारह वर्ष की अवस्था तक पहुँचने पर बालक इस योग्य होता है कि उसका व्यवहार स्थायी हो सके।



समाज के समस्त व्यवहार को ग्रहण करने में व्यक्ति को अनेक वर्ष लगते हैं। इसमें नैतिक व्यवहारों को सिखाने का उद्देश्य बालकों में अनुपासन की भावना विकसित करना है। यदि अनुपासन की धारणा स्पष्ट है तो नैतिक व्यवहार को सरलतापूर्वक सीख लेता है। बालक सही—गलत, अच्छा—बुरा, दण्ड एवं पुरस्कार के कारण नैतिक व्यवहारों को सीख लेता है। परन्तु सिखाना मात्र ही नैतिक व्यवहार का अधिगम नहीं है। ईमानदारी का अध्ययन करके यह परिणाम निकाला गया कि विविष्ट परिस्थितियों में ऐसे गुणों का विकास किया जा सकता है। कभी—कभी ऐसी भी परिस्थिति आती है कि बालक सही निर्णय लेने में संघर्ष की स्थिति से गुजरता है।

#### 4.3.1 बालक की विभिन्न अवस्थाओं में नैतिक विकास

##### 4.3.1.1 भौतिक अवस्था में नैतिक विकास :-

बालक का नैतिक विकास संवेगात्मक विकास पर आधारित होता है। बालक एक कोरे कागज की भांति होता है। जिस पर जो चाहे लिखा जा सकता है, इस प्रकार बालक के मन—पटल पर चाहे जैसे अनुभव तथा धारणाएँ विकसित की जा सकती हैं। वह न तो नैतिक होता है और न ही अनैतिक।

बालक को अच्छे—बुरे की पहचान सबसे पहले अपने माता—पिता द्वारा स्वीकृत और निषिद्ध क्रियाओं से होती है जिस काम को माता—पिता बुरा समझते हैं और जिसे करने का निषेध करते हैं, उसे बालक बुरा समझता है। दूसरी ओर, जिस काम को माता—पिता अच्छा समझते हैं और उसे करने की आज्ञा देते हैं, उसे बालक अच्छा समझता है। इस प्रक्रिया में दण्ड और पुरस्कार का भी महत्व है।

यहाँ पर पिता-पुत्र का नैतिक विकास संवेगात्मक विकास पर आधारित है। उसे जिस कार्य को करने पर पुरस्कार मिलता है उससे उसे सुख होता है। और वह उसे अच्छा समझता है। दूसरी ओर, जिस कार्य के करने पर माता-पिता से दण्ड मिलता है, उससे उसे दुःख होता है और वह उसे बुरा समझने लगता है। इस तरह बालक में अच्छी और बुरी धारणाएँ बन जाती हैं। स्पष्ट है कि इनमें से बहुत सी धारणाएँ गलत हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, जिन परिवारों में माता-पिता लड़के, लड़कियों के साथ खेलना पसन्द नहीं करते, वहाँ पिता-पुत्र उसे बुरी बात मानते हैं। जिन परिवार में इसकी रोक-टोक नहीं होती वहाँ पिता-पुत्र इस बात को बुरा नहीं मानते। भौतिकावस्था में ग्रहण की गयी अच्छे-बुरे की ये धारणाएँ बालक की वयस्कावस्था में भी बहुत कुछ बनी रहती है। सच तो यह है कि भौतिकावस्था में ही बालक के विकास की नींव पड़ती है।

#### **4.3.1.2 बाल्यावस्था में नैतिक विकास :-**

बाल्यावस्था में बालक परिवार से निकलकर गली-मोहल्लों के बच्चों में खेलने लगता है और उनमें प्रचलित अच्छाई-बुराई की धारणाएँ उसे प्रभावित करती हैं। वह समूह की नीति का अपनाता है। समूह में जो बात अच्छी समझी उसे वह अच्छा और जो बात बुरी समझी जाती है उसे बुरा समझता है। कभी-कभी तो वह समूहों की धारणाओं को ग्रहण करके माता-पिता की धारणाओं की उपेक्षा कर देता है। इस आयु में और बाल्यावस्था में बालक के नैतिक व्यवहार में विशमताएँ दिखायी पड़ना स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए, वह कुछ परिस्थितियों में धोखा देना, चोरी करना और झूठ बोलना बुरा मानता है, जबकि अन्य परिस्थितियों में इनको क्षम्य समझता है। नैतिक व्यवहार की समीचीनता बहुत कुछ उसके सीखने की क्रिया पर आधारित है। इस पर बालक की क्रियाओं, दैनिक जीवन, इच्छाओं और पक्षपातों आदि का भी प्रभाव पड़ता है। बालक परिवार में और स्कूल में बड़ों के व्यवहार को देखकर बहुत से अनैतिक व्यवहार को सामान्य मान बैठते हैं और इसी के कारण उन्हें अपने व्यवहार में भी अपना लेते हैं। बाल्यावस्था से ही बालक केवल दूसरों के आदेशों पर न चलकर अच्छे-बुरे के विषय में कुछ न कुछ धारणाएँ बना लेता है। अनेक अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि कभी-कभी ये धारणाएँ इतनी प्रबल होती

है कि इनको आसानी से बदला नहीं जा सकता। अतः नैतिक विकास में अभिभावकों और शिक्षकों का गंभीर उत्तरदायित्व है।

#### 4.3.1.3 कि गोरवस्था में नैतिक विकास :-

कि गोरवस्था में कि गोर के नैतिक विकास पर उसके मानसिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अनेक अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि इस आयु में लड़के-लड़कियों में काम प्रवृत्ति विशेष रूप से तीव्र होती है। अतः इस आयु में अच्छे-बुरे की धारणाओं का काम प्रवृत्ति संबंधी क्रियाओं के विषय में विभिन्न संस्कृतियों में काम संबंधी व्यवहार से विशेष रूप से संबंधित होना स्वाभाविक ही है। परन्तु विभिन्न संस्कृतियों में काम प्रवृत्ति संबंधी क्रियाओं के विषय में विभिन्न नियम होने के कारण कि गोरों के नैतिक आचार-विचार में अंतर पाया जाता है। इस आयु में यौन शिक्षा का नैतिक विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। वास्तव में इस आयु में दमन से अधिक भोधन और मार्गान्तरीकरण से काम करना चाहिए। अनेक शिक्षा मनोवैज्ञानिक स्कूलों में नैतिक शिक्षा और धार्मिक शिक्षा की भी राय देते हैं। परन्तु सामान्य रूप से सभी यह मानते हैं कि नैतिक शिक्षा केवल पुस्तकों और उपदेशों से ही नहीं शिक्षक द्वारा अच्छे आदर्श उपस्थित करके दी अत्यंत आवश्यक है। इस संबंध में स्कूल के वातावरण का महत्व भी किस प्रकार से कम नहीं है। स्कूल और परिवार के अलावा सामान्य सामाजिक वातावरण भी व्यक्ति के नैतिक विकास को प्रभावित करता है। इसलिए सभ्य और असभ्य समाजों में व्यक्ति के नैतिक आचार-विचार में भारी अंतर देखा जा सकता है। समाज में ही व्यक्ति के मूल्य निर्धारित होते हैं। यद्यपि विचारशील व्यक्ति समाज की नैतिकता का अन्धानुकरण नहीं करते, परन्तु समाज के अधिकतर व्यक्ति सामान्य नैतिक विचारों का ही अनुगमन करते हैं। अतः देश के नेताओं, महापुरुषों, साधु-संतों, विद्वानों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, अभिनेताओं आदि ऐसे सभी लोगों का व्यक्ति के नैतिक विकास पर प्रभाव पड़ता है जो उसके सामने उदाहरण स्वरूप होते हैं। इसके अलावा वयस्कावस्था में नौकरी मिलने, न मिलने, इच्छानुसार व्यवसाय न मिलने पर परिवार की आर्थिक स्थिति, व्यावहारिक



सामंजस्य तथा परिवार की सुख भान्ति, व्यक्ति की सामाजिक, बौद्धिक और भौक्षिक स्थिति, उसके साथियों का नैतिक स्तर, समाज में अनैतिक संस्थाओं, जैसे वे या आदि की उपस्थिति का उसके नैतिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

सामान्य रूप से व्यक्ति के विकास में नियमों, परम्पराओं धार्मिक आदेशों, रीति-रिवाजों आदि से उसके नैतिक विचार निर्धारित होते हैं। परन्तु अनेक अवस्थाओं में इसके अपवाद दिखलायी पड़ते हैं। न तो व्यक्ति सदैव दूसरों द्वारा उचित समझी जाने वाली बातों को उचित समझता है और न सदैव अपने द्वारा उचित समझे जाने वाले सिद्धांतों पर ही चलता है। अतः नैतिक विकास एक जटिल प्रक्रिया है और उसमें व्यक्ति और उसके चारों ओर के मनुष्यों की क्रिया-प्रतिक्रिया का बड़ा महत्व है। नैतिक विकास में भारी व्यक्तिगत अंतर देखा जा सकता है। इस परिस्थिति का नैतिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ेगा यह भाव-प्रतिपात निर्धारित नहीं कहा जा सकता फिर भी अच्छी परिस्थितियों का सामान्य रूप से वांछनीय प्रभाव पड़ता है।

#### **4.3.2 नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक**

नैतिक विकास अनेक कारणों से प्रभावित होता है—

##### **4.3.2.1 परिवार**

बच्चों के लिए शिक्षा, संस्कृति अनुशासन, शिष्टता आदि सभी विशयों की प्राथमिक पाठशाला घर/परिवार है। घर/परिवार के वातावरण का प्रभाव बालक के नैतिक विकास पर पड़ता है। परिवार सांस्कृतिक प्रतिमानों को व्यावहारिक रूप में बच्चों को प्रदान कर सकता है। उन परिवारों में बच्चों का सकारात्मक नैतिक विकास तीव्रता से होता है जहाँ सदस्यों में आपस में सौहार्द्र हो, बच्चों को स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लेने व अपने निर्णय के परिणामों का सामना का

अवसर मिले, नैतिक कहानियाँ व साहित्य बच्चों को उपलब्ध हो, सांस्कृतिक व्यवहारों को प्रदर्शित करने पर पुरस्कार मिले, बालकों को नैतिक रूप से बलवान बनाने का प्रयास किया जाए।

जिन परिवारों के सदस्य आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं, अमान्ति मचाए रहते हैं, तो भी बालक के नैतिक विकास पर इसका प्रभाव पड़ता है। बालक अनुशासनहीन हो जाते हैं। अधिक सन्तान, अनपेक्षित सन्तान होने के कारण या अन्य किसी कारण से यदि बालक तिरस्कार होता है तो वह अक्सर अनैतिक कार्यों में लिप्त हो जाता है। बालक पर माता-पिता के अनैतिक चरित्र और आचरण-व्यवहार का बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

#### **4.3.2.2 विद्यालय**

बालक अपने परिवार से चारित्रिक और नैतिक गुणों को लेकर बीज रूप में विद्यालय में प्रवेश करता है। इन गुणों का अंकुरण और व्यापक संदर्भ में विकास विद्यालय के वातावरण में ही होता है। जिन विद्यालयों का वातावरण भुद्ध संतुलित और सही होता है, जाति, धर्म वर्ग के भेदभाव से परे होता है, राष्ट्रीय एकता और सद्भाव का पोशक होता है, वहाँ विद्यार्थियों का नैतिक विकास उत्तम तरीके से होता है। विद्यालय का दूषित भौतिक वातावरण, दूषित पाठ्यक्रम, कठोर अथवा अपर्याप्त अनुशासन, अध्यापकों का दुर्व्यवहार, मनोरंजन के उपयुक्त साधनों की अनुपलब्धता आदि विद्यार्थियों के नैतिक विकास में बाधक सिद्ध होते हैं। बालक अपचारी हो जाते हैं।

#### **4.3.2.3 बौद्धिक विकास**

नैतिक विकास और बौद्धिक विकास में सापेक्षित संबंध होता है। वैलेन्टाइन और बर्ट ने निम्न बुद्धि को बाल अपराध का एक कारण माना है। कम बुद्धि वाले बालक सही और गलत में फर्क नहीं कर पाते। बुद्धिमान बालक सही-गलत का निर्णय भीघ्न ले लेते हैं।

#### **4.3.2.4 साथी –समूह**

मित्रों की संगति का प्रभाव बालक के नैतिक विकास पर पड़ता है। बालक अपने मित्रों एवं संगी-साथियों के साहचर्य में अच्छी-बुरी सभी बातें सीखता है। हीली के अनुसार 34 प्रतिशत और सिरिल बर्ट के अनुसार 18 प्रतिशत बाल संगति के कारण बने।

#### **4.3.2.5 यौन व्यवहार**

जिन समाजों में सामाजिक नियंत्रण कम मिलता है, वहाँ लोग उचित-अनुचित का ध्यान नहीं रखते और अनैतिक यौन संबंध स्थापित कर लेते हैं। ऐसे वातावरण में बालक भी बुरी आदतें सीखते हैं।

#### **4.3.2.6 मनोरंजन संबंधी कारक**

अलील और गन्दे मनोरंजन के साधन बालकों के नैतिक विकास पर कुप्रभाव डालते हैं। स्वस्थ मनोरंजन नैतिकता का विकास करता है। अस्वस्थ मनोरंजन के साधनों की वृद्धि बालकों में अनैतिक प्रवृत्तियों को जन्म देती है, जैसे-सिनेमा के पर्दे पर प्रदर्शित अलील चित्र, हत्या, लूट, मार-पीट आदि के दृश्य, टी. वी. पर अभिनेताओं के दृश्य, अलील साहित्य, दैनिक समाचार पत्र-पत्रिकाओं में निकलने वाली अपराधी घटनाएँ, धोखाधड़ी, नालायकी आदि के किस्से आदि।

#### **4.3.2.7 समाज और संस्कृति**

स्कूल और परिवार के अलावा सामान्य सामाजिक वातावरण भी बालक के नैतिक विकास को प्रभावित करता है इसलिए सभ्य और असभ्य, आधुनिक और आदिम समाजों में बालकों के नैतिक आचार-विचार में भारी अंतर देखा जा सकता है। समाज में बालक के मूल्य निर्धारित होते हैं। देश के महापुरुषों, साधु-संतों, विद्वानों वैज्ञानिकों साहित्यकारों, अभिनेताओं आदि ऐसे सभी लोगों का बालक के नैतिक विकास पर प्रभाव पड़ता है जो कि उसके सामने उदाहरण स्वरूप होते हैं।

नैतिक विकास में भारी व्यक्तिगत अंतर देखा जा सकता है। किस परिस्थिति का किस बालक के नैतिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह भविष्य-प्रतिफल निर्धारित नहीं किया जा सकता फिर भी अच्छी परिस्थितियों का सामान्य रूप से वांछनीय प्रभाव ही पड़ता है।

### अपनी प्रगति की जांच करें

**नोट :-** (अ) नीचे दिये गये स्थान पर उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिये उत्तर से करें।

1. नैतिक विकास से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

#### 4.4 कोहलबर्ग द्वारा प्रदत्त नैतिक विकास के स्तर अथवा अवस्थायें

बालकों में नैतिक विकास कैसे आगे बढ़ता है यह जानने के लिये मनोवि लेखन तथा अनुसंधानकर्त्ताओं द्वारा विविध प्रयत्न किये जाते रहे हैं। इनमें लॉरेन्स कोहलबर्ग (Lawrence Kohlberg) द्वारा किया गया प्रयास काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। बालकों में नैतिकता के विकास की कुछ निश्चित एवं सार्वभौमिक अवस्थायें पायी जाती हैं।

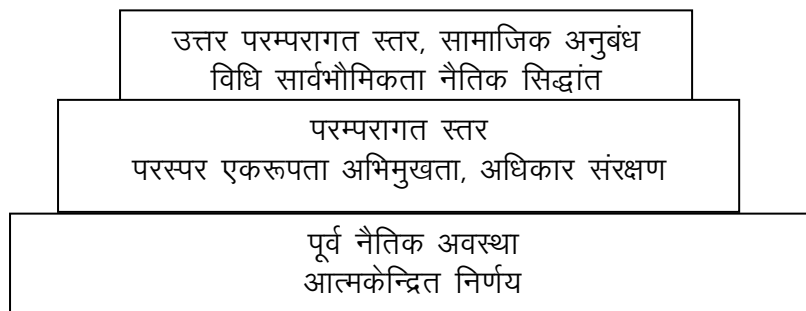
##### 4.4.1 कोहलबर्ग द्वारा बताये तीन स्तर

क्रं.	स्तर	आयु	नैतिक विकास
1	पूर्व नैतिक स्तर	4 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक	मौलिक विकास
2	परम्परागत नैतिक स्तर	10 तथा 13 वर्षों तक	समाजिक मान्यताओं के अनुकूल विकास
3	आत्म अंगीकृत नैतिक स्तर	13 वर्ष से प्रारंभ होकर प्रौढ़ावस्था तक	व्यवहार और व्यक्तित्व गुणों में आत्मगत विकास

कोहलबर्ग द्वारा प्रदत्त इस प्रकार के वर्गीकरण को कुछ और आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया जाय तो निम्न प्रकार के वर्गीकरण द्वारा बालकों के नैतिक विकास की छः प्रमुख स्तर या अवस्थायें तय की जा सकती हैं। (दिखिये चित्र 4.4.02)

##### 4.4.2 नैतिक निर्माण प्रक्रिया

आधारयुक्त चेतन अवस्था  
प्रौढ़ावस्था



**चित्र—** नैतिक विकास के स्तर तथा सौपान 4.4.02

#### 4.4.3 पूर्व नैतिक स्तर:—

यह स्तर जन्म से लेकर दो वर्ष की आयु तक रहता है। इस अवस्था में बालक से किसी प्रकार के नैतिक मूल्यों को धारण करने की बात ही नहीं उठती क्योंकि इस स्तर पर उसे यह समझ नहीं होती कि उसके ऐसा करने से किसी अन्य को नुकसान होगा या अच्छा लगेगा, यह बात उसकी समझ से बाहर ही होती है। बालक को अपनी भावनाओं, संवेगों को नियंत्रण करना नहीं आता है। वह अपनी जिद मनमाने के लिये चाहे उसके लिये, रोना, चिल्लाना, मारना, पीटना, जैसा कोई भी अनैतिक मार्ग क्यों न अपनाना पड़े।

कोहलबर्ग ने अध्ययन को आगे बढ़ाया। कोहलबर्ग ने कनाडा, मैक्सिको, ताइवान टर्की जैसे विविध देशों में 75 पुरुषों पर देशान्तर-सांस्कृतिक अध्ययन किया और पाया कि नैतिक विकास तीन स्तरों, छः अवस्थाओं में होता है। प्रत्येक स्तर में दो अवस्थाएँ होती हैं जो व्यक्ति के चिन्तन के तरीके का वर्णन करती हैं और इन तरीकों के नैतिक आधार का वर्णन करती हैं।

---

#### 4.5 कोहलबर्ग की छः अवस्थाओं का वर्णन

---

##### 4.5.1 प्रथम अवस्था:— विकास का पूर्व परम्परागत स्तर

स्व-ध्यान का स्तर इस अवस्था का कार्यकाल तीसरे वर्ष से भूख होकर 6 वर्ष तक होता है। इस स्तर पर बालक प्राथमिक रूप से अपने को कठिनाई से दूर रखने पर ही ध्यान देता है। बहुत अधिक अहम केन्द्रित चिंतन पाया जाता है, बालक की सभी व्यावहारिक क्रियाएँ अपनी वैयक्तिक आवश्यकताओं और इच्छाओं

की पूर्ति के चारों ओर केन्द्रित रहती है। इस अवस्था में चिंतन का अत्यधिक आदिम स्वरूप होता है किसी क्रिया के भौतिक परिणाम के आधार पर उसे अच्छा या बुरा समझा जाता है। उसके लिये वही नैतिक होता है जो उसके स्व यानी आत्म कल्याण से जुड़ा हुआ होता है।

#### **4.5.2 द्वितीय अवस्था:— विकास का परम्परागत स्तर**

इस अवस्था में उन कार्यों को अच्छा मानते हैं जिनमें स्वयं के साथ-साथ दूसरों की आवश्यकताएँ भी संतुष्ट हो सकें। कार्य में ईमानदारी तो होती है परन्तु ईमानदारी का स्वरूप भौतिक होता है, उदाहरणार्थ, तुमने मुझे थप्पड़ मारा है, मैं भी मारूँगा। इस अवस्था में व्यक्ति की नैतिकता में उसे परिवार, समूह या समाज की अपेक्षाओं, नियम और तिमानों की झलक होती है।

#### **4.5.3 परम्पराओं को धारण करने वाली अवस्था**

सातवें वर्ष से लेकर कि शी अवस्था के प्रारम्भिक काल का संबंध इस अवस्था से है। इस अवस्था का बालक सामाजिकता के गुणों को धारण करता हुआ देखा जाता है अतः उसमें समाज के बनाये नियमों, परम्पराओं तथा मूल्यों को धारण करने संबंधी नैतिकता का विकास होता हुआ देखा जा सकता है। इस अवस्था में उसे अच्छाई-बुराई का ज्ञान हो जाता है और वह यह समझने लगता है कि उसके किस प्रकार के आचरण या व्यवहार से दूसरों का अहित होगा या ठेस पहुँचेगी। वह अपने माँ बाप, गुरुजन तथा अध्यापकों को नाराज नहीं करना चाहता और इसलिये उनकी कही हुई बातों तथा नियमों को अपनाकर अपने व्यवहार को मान्य परम्पराओं तथा नैतिकता के दायरे में ही रखना चाहता है। इसके अतिरिक्त कई बार वह नियमों तथा परम्पराओं के उल्लंघन के फलस्वरूप उसे जो परिणाम भुगतने होंगे उनके डर भी नियमों तथा परम्पराओं द्वारा मान्यता प्राप्त व्यवहार एवं आचरणों को अपनाने के लिए बाध्य होता है। यही बात आगे चलकर उसे समाज तथा देश के कायदे कानूनों को भय व श्रद्धा पालन करते रहने की आदत विकसित करने का कारण बनती है।

#### **4.5.4 तृतीय अवस्था:— अच्छे लड़की/लड़के का अभिमुखीकरण**

इस अवस्था में किसी भी व्यक्ति को आम सामाजिक धारणा के अनुरूप अच्छा समझा जाता है, जैसे— अच्छा बेटा होने का मतलब है माँ के हर काम में मदद करना, अच्छा पति वही है जो अपनी पत्नी के लिए अपनी सुरक्षा दांव पर लगा दे।

#### 4.5.5 आधारहीन आत्म चेतनावस्था

यह अवस्था कि गोरवस्था से जुड़ी हुई है। इस अवस्था में बालकों को सामाजिक, भाषाई तथा मानसिक विकास अपनी ऊँचाईयों को छूने लगता है और उसमें आत्म चेतना का प्रादुर्भाव हो जाता है। यह मेरा आचरण हैं, मैं ऐसे व्यवहार करता हूँ, इसकी उसे अनुभूति होने लगती है तथा अपने व्यवहार आचरण और व्यक्तित्व संबंधी गुणों की स्वयं ही आलोचना करने की प्रवृत्ति उसमें पनपने लगती है पूर्णता की चाह उसमें स्वयं से असंतुष्ट रहने का मार्ग प्रशस्त कर देती है। असंतुष्ट उसे समाज तथा परिवेश में जो कुछ गलत हो रहा है (जैसा वह समझता है) उसे बदल डालने या परम्पराओं के प्रति विद्रोही रुख अपनाने को उकसाती है। इस तरह यहाँ उसका व्यवहार फ्रायड की भावद्वार में उसके सुपर ईगो से संचालित होता हुआ देखा जा सकता है। पूर्णता तथा नैतिकता को अपना आदर्श मानने की बात उसे समाज की वास्तविकता तथा व्यावहारिकता से काफी दूर ले जाती है और परिणामस्वरूप इस अवस्था में उसके व्यवहार पर तर्क और प्रयोजन के स्थान पर भावनाओं का अधिक प्रभाव रहता है। उदाहरण के लिये जो बात वह सही समझता है वह उसी पर आरुढ़ रहना चाहता है चाहे उसके लिये उसे फाँसी पर ही क्यों न चढ़ा दिया जाये। इस प्रकार का आचरण और व्यवहार नैतिक मूल्यों को धारण करने का बहुत ही अच्छा आधार और तार्किक मान्यता प्रस्तुत करती है। यही कारण है कि सत्य पर आरुढ़ रह कर समाज और देश के लिये कुर्बानी देने वाले नवयुवकों को तैयार करने का कार्य इस प्रकार के नैतिक विकास स्तर द्वारा अच्छी तरह से किया जा सकता है। परन्तु परेशानी तभी होती है जबकि कि गोरों का व्यवहार आधारहीन विचारधारा पर आधारित होकर मात्र उनकी भावनाओं का खिलौना बन कर या तो उनके लिये ही आत्मघाती साबित



होता है अथवा उससे समाज के हित चिन्तन की बजाय बुराईयों को ही जन्म मिलता है। अतः जब तक व्यवहार को पर्याप्त कारण और आधार न मिल जाये तब तक उसे नैतिकता या चारित्रिक विकास का पर्याय नहीं माना जाना चाहिए।

#### **4.5.6 चतुर्थ अवस्था:— नैतिक तर्क का उच्चतम स्तर**

यह नैतिक तर्कों का उच्चतम स्तर है। पारिवारिक भूमिका और अपेक्षाओं के बजाय नियम और कानून पर अधिक ध्यान रहता है। अपने अधिकारी का सम्मान करना और सामाजिक प्रणाली को बनाए रखना किसी व्यक्ति के लिए सही व्यवहार होता है। सामाजिक प्रणाली का अर्थ है— धार्मिक और कानूनी प्रणाली।

#### **4.5.7 आधारयुक्त आत्मचेतना अवस्था**

नैतिक या चारित्रिक विकास की यह चरम अवस्था है। भलीभांति परिपक्वता ग्रहण करने के बाद ही इस प्रकार का विकास संभव है। अब यहाँ जिस प्रकार के नैतिक आचरण और चारित्रिक मूल्यों की बात व्यक्ति विशेष में की जाती है उसके पीछे केवल उसकी भावनाओं का प्रवाह मात्र ही नहीं होता बल्कि वह अपनी मानसिक भाक्तियों का उचित प्रयोग करता हुआ अच्छी तरह सोच समझकर किसी व्यवहार या आचरण विशेष को अपने व्यक्तित्व गुणों में धारण करता हुआ पाता जाता है। उदाहरण के लिये वह भावनाओं में बह कर अहिंसावादी होने या युद्ध विरोधी होने संबंधी मूल्य को आत्मसात नहीं करता। उसका इस संबंध में जो भी नैतिक आचरण होता है वह परिस्थिति विशेष की आवश्यकताओं को देखते हुये किसी ठोस तार्किक आधारभूमि पर आधारित होता है। अगर उसके देश पर विदेशी आक्रमण हो रहा हो या आतंकवादी गतिविधियों हो रही हो तो युद्ध करने और भास्त्र उठाने की बात को वह नैतिक मूल्यों के दायरे में ही रखना चाहेगा, परन्तु आक्रमण कर दूसरे देश की भूमि को हथियाने की बात अब भी उसके लिये अनैतिक ही बनी रहेगी। इस तरह नैतिक विकास की इस चरम अवस्था में पहुँचकर व्यक्ति का नैतिक आचरण पूरी तरह उसकी संज्ञानात्मक भाक्तियों तथा संबंधों की सीमाओं को समझता हुआ पूरी तरह तर्कसम्मत एवं विचारयुक्त बन

जाता है। इस प्रकार का चारित्रिक और नैतिक विकास ही व्यक्ति विशेष के लिये आदर्श माना जा सकता है।

#### **4.5.8 पंचम अवस्था:— विकास का पाँचवाँ परमपरागत स्तर**

इस अवस्था में प्रदत्त परम्पराएँ और मानक नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों की ओर खिसकती हैं। इस अवस्था में सामाजिक अनुबंध अभिमुखीकरण प्राप्त होता है। सामान्य अधिकारों और मानकों के आधार पर ही किसी कार्य को अच्छा समझा जाता है। इस अवस्था में व्यक्तिगत मूल्यों और दृष्टिकोण के प्रति स्पष्ट जागरूकता होती है। लोगों की सहमति प्राप्त करने पर अत्यधिक बल दिया जाता है, बने बनाए नियमों को केवल मानने की ही नहीं बदला देने की भी सम्भावना होती है। इस बदलाव के लिए पूरे समाज का उपयोग किया जाता है।

#### **4.5.9 अष्टम अवस्था:— नैतिक विकास की पराकाश्टा**

इस अवस्था में नैतिक विकास की पराकाश्टा होती है। वैयक्तिक नैतिक सिद्धांतों के आधार पर तर्क दिए जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत होता है—जीवन के लिए सम्मान। इस अवस्था में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को अमूल्य समझा जाता है, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, समुदाय का हो।

#### **4.5.10 उदाहरण— नैतिक प्रक्रिया निम्न उदाहरण से स्पष्ट हो सकेगी।**

##### **नैतिक प्रश्न :—**

उदाहरणार्थ माना कि आपकी माँ सुखद बीमार है। रात्रि 11 बजे डाक्टर ने इन्हे देने के लिए कोई दवा बनायी है। आप बाजार में दवा खरीदने जाते हैं, परंतु सभी दुकाने बंद हैं। डाक्टर का कहना है कि दवा तुरंत चाहिए वरना आपकी माँ का स्वर्गवास हो सकता है। ऐसी स्थिति में क्या आप अपने किसी मित्र, जो भाहर में कहीं दूर रहता है, की दुकान का ताला तोड़कर दवा लाना चाहेंगे? कारण सहित बताइये।

कोहलबर्ग के नैतिक विकास के विभिन्न स्तरों तथा सोपानों में निहित तर्क के कारण विभिन्न सोपानों में उपरोक्त प्रश्न पर बालक के द्वारा भिन्न-भिन्न उत्तर अपेक्षित होंगे जिन्हें अग्रांकित सारणी में कारण सहित प्रस्तुत किया गया है।

## सारणी

### नैतिक विकास के विभिन्न स्तरों पर नैतिक चिन्तन

नैतिक विकास का स्तर	उत्तर	कारण
<b>(I) पूर्व परम्परागत स्तर</b>		
1 आन्तर्केन्द्रित निर्णय	हाँ	ऐसी परिस्थिति में दुकान का ताला तोड़कर दवा ले आना चाहिए, जिससे माँ का जीवन बचाया जा सके।
2 दंड तथा आज्ञापालन अभिमुखता	नहीं	किसी भी परिस्थिति में दूसरे की दुकान का ताला नहीं तोड़ना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से पुलिस दंड देगी।
3 यान्त्रिक सापेक्षिक अभिमुखता	हाँ	ऐसी परिस्थिति में दुकान का ताला तोड़कर दवा ले आना चाहिए, क्योंकि माँ का जीवन मुख्य है।
<b>(II) परम्परागत स्तर</b>		
4 परस्पर एकरूप अभिमुखता	नहीं	किसी भी परिस्थिति में इसमें की दुकान का ताला नहीं तोड़ना चाहिए, ऐसा गलत व्यक्ति ही करते है।
5 अधिकार संरक्षण अभिमुखता	नहीं	किसी भी परिस्थिति में दूसरों की दुकान का ताला नहीं तोड़ना चाहिए, ऐसा करना सामाजिक प्रणाली के विरुद्ध होगा। हमें व्यक्तिगत हानिसहन करनी चाहिये।
<b>(III) उत्तर परम्परागत स्तर</b>		
6. सामाजिक अनुबंध विधि सम्मत अभिमुखता	हाँ	समाजिक नियम एक-दूसरे के लाभ के लिए बनाए गए है, इसलिए परिस्थिति की तात्कालिक आव यकता को देखते हुए दुकान का ताला तोड़कर दवा ले आनी चाहिए।
7. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिमुखता	हाँ	किसी भी मानव जीवन को बचाना मुख्य है इसलिए ऐसी संकटकालीन स्थिति में मित्र की दुकान का

		कर दवा ले आनी चाहिए।
--	--	----------------------

अपनी प्रगति की जाँच करें—

नोट :— (अ) नीचे दिये गये स्थान पर उत्तर लिखे।

(ब) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिये उत्तर से करें।

3. कोहलबर्ग ने नैतिक विकास सिद्धांत को कितने स्तरों पर वर्गीकृत किया है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :—

सही विकल्प का चयन करें।

- (अ) कोहलबर्ग के अनुसार निम्नलिखित में कौन सा नैतिक विकास का स्तर है?

(1)संवेदनात्मक—गायक काल (2) ज्ञानात्मक चिंतन का काल

(3) कै गोर विकास का काल (4) पूर्व स्तर काल

उत्तर.....

(ब) रिक्त स्थान भरिये :-

(अ) नैतिक विकास होना बालक की.....आयु से प्रारंभ हो जाता है।

(ब) बालकों को सामाजिक, भारीरिक तथा.....विकास अपनी ऊँचाईयों को छूने लगता है।

---

#### ~~4.6 कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत की आलोचना सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में:-~~

कोहलबर्ग के नैतिक विकास के तीन स्तर का उल्लेख किया है जिसमें व्यक्ति का नैतिक विकास होता है। भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक के परिप्रेक्ष्य में कोहलबर्ग के नैतिक विकास की तीन सीमाओं पर आलोचना का ध्यान गया है।

##### 4.6.1 लिंग भेद:-

हार्बर्ड वि विद्यालय के अपने ही भोध समूह के साथियों ने यह आलोचना प्रस्तुत की 1970 के द कि के अंतिम वर्षों में कैरोल गिलीगन ने कोहलबर्ग के सिद्धांत में लिंग भेद की बात कही कि इस मॉडल में पुरुषों के मूल्यों और गुणों को अधिक महत्व दिया गया है, जबकि महिलाओं से जुड़े गुणों और परम्परागत मूल्यों पर कम ध्यान दिया गया। कैरोल के अनुसार पुरुष न्याय को अधिक ध्यान में रखते हैं और महिलाएँ दूसरों के देखभाल पर अधिक ध्यान देती हैं।

परन्तु बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने यह माना कि कैरोल की आलोचना थोड़ी बहुत तो ठीक है, परन्तु पूरी तरह ठीक नहीं है, महिलाएँ भी न्यायप्रिय होती हैं, यह अव य है कि उनसे देखभाल करने का गुण अधिक होता है।

##### 4.6.2 सांस्कृतिक अंतर:-

कोहलबर्ग के सिद्धांत के अनुसार वि व के सभी लोगों (आदिम जनजति से लेकर विकसित भाहरों तक) का नैतिक विकास छः अवस्थाओं से होकर गुजरता है। आलोचनाकर्त्ताओं का मत है कि आयु, जेन्डर, प्रजाति, समूह आदि के सापेक्षिक महत्व को नैतिक विकास के संदर्भ में नकारा नहीं जा सकता। भारतीय, संस्कृति, समाज, परिवार के संस्कार में भिन्नता से नैतिक विकास को भी नकारा नहीं जा सकता।

#### 4.6.3 विचार क्रिया समस्या:—

कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक निर्णय व्यक्ति के कार्य का भावित्त ाली और अर्थपूर्ण भविष्यवक्ता होता है। बहुत से मनोवैज्ञानिक इस तथ्य से सहमत नहीं नैतिक निर्णय बहुत कुछ परिस्थितियों, समय आदि कारक होते हैं व्यक्ति जानता है कि कोई कार्य गलत है, फिर भी करता है।

#### उदाहरणार्थ:—

विद्यार्थी जानते हैं कि परीक्षा में नकल करना गलत है, फिर भी नकल करते हैं। नैतिक निर्णय किसी कार्य को करने के पीछे अकेला कारक नहीं होता। अन्य कारक भी सम्मिलित होते हैं।

---

#### 4.7 भारतीय सामाजिक संस्कृति सेटिंग में नैतिक विकास:—

---

भारतीय सामाजिक संस्कृति में नैतिक विकास भौ ावास्था से ही माता—पिता परिवार के बड़े बुर्जगों के द्वारा ही उनका नैतिक विकास का प्रारम्भ कर दिया जाता है। धीरे—धीरे बालक के विकास के साथ उसका नैतिक विकास भी होने लगता है।

अभिभावकों तथा समाज के विभिन्न समुदाय के सदस्यों के साथ अच्छे और सौहार्दपूर्ण संबंध बनाकर बालक के समक्ष अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं।

भारतीय समाज में ईमानदारी, न्यायप्रियता, नियमबद्धता, सत्यता जैसे गुणों का परिचय मिलता है। भारतीय संस्कृति में बालक को समूह में एक दूसरे के प्रति सहानुभूति, सहयोग, नेतृत्व नैतिक मूल्यों पर अमल जैसे गुणों को अंगीकार करते हैं।

---

#### 4.8 इकाई सारांश— याद रखने योग्य बातें:—

---

- नैतिक विकास से तात्पर्य नैतिक मानदण्डों को अपने में समाहित करता है जिससे व्यक्ति अपनी नैतिक मूल्यों के अनुरूप आचरण कर सकें।
- मानवीय क्रियाकलापों को निर्देशित करने वाले विवास, मूल्य, और सिद्धांत ही नैतिकता कहलाते हैं।
- नैतिक विकास अन्य अवस्थाओं में जिस प्रकार विकसित होता है उसका एक क्रम होता है किस अवस्था में नैतिक विकास हुआ है इसकी सीमा रेखा नहीं बाँधी जा सकती।
- भौतिकावस्था में सुखद अथवा दुखद अनुभव के आधार पर अच्छे-बुरे की पहचान तथा पचाताप की भावना न होना नैतिक विकास के लक्षण है।
- पूर्व बाल्यावस्था में नैतिक व्यवहार के लक्षण इस प्रकार विकसित होते हैं
  - (1) औचित्य—अनौचित्य के कारण को न समझना।
  - (2) समूह का अनुकरण करना।
  - (3) न्याय और आदर को समझना।
  - (4) माता और पिता के पृथक—पृथक नैतिक स्तर को जानना।
- किशोरावस्था में नैतिक विकास परिपक्व हो जाता है। यौन संबंधी नैतिकता के प्रति वह जागरूक हो जाता है। माता—पिता के दोहरे नैतिक स्तर को वह जानने लगता है। आत्मलोचना करने और आत्मनिर्णय पर चलने की उसमें भावनाएँ पायी जाती हैं।
- अनेक कारणों से बालक का नैतिक विकास प्रभावित होता है। परिवार के वातावरण का प्रभाव बालक के नैतिक विकास पर पड़ता है। बच्चों के

लिए शिक्षा, संस्कृति अनुपासन, शिष्टता आदि सभी विशयों की प्राथमिक पाठाला पर है।

- विद्यालय— बालक अपने परिवार से चारित्रिक और नैतिक गुणों को लेकर बीज रूप से विद्यालय में प्रवेश करता है। वहाँ विद्यार्थियों का नैतिक विकास उत्तम तरीके से होता है।
- विद्यालय का दूषित भौतिक वातावरण, दूषित पाठ्यक्रम, कठोर अपर्याप्त अनुपासन, अध्यापकों को दुर्व्यवहार, मनोरंजन के उपयुक्त साधनों की अनुपलब्धता आदि विद्यार्थियों के नैतिक विकास से बाधक सिद्ध होते हैं। बालक अपचारी हो जाते हैं।
- मित्रों की प्रगति बालक के नैतिक विकास पर पड़ता है।
- कोहलबर्ग के द्वारा नैतिक विकास प्रक्रिया को कुछ स्तरों में वर्गीकृत करके स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। नैतिक विकास के तीन स्तर क्रमशः पूर्व नैतिक स्तर, परम्परागत स्तर तथा उत्तर परम्परागत स्तर नामक तीन स्तरों में नैतिक विकास को बांटा है। कोहलबर्ग ने पूर्व नैतिक स्तर को आत्मकेन्द्रित निर्णय, दंड व आज्ञापालन, अभिमुखता तथा यांत्रिक सापेक्षिक अभिमुखता नामक तीन सोपानों में परम्परागत स्तर को परस्पर एकरूप अभिमुखता तथा अधिकार एवं संरक्षण अभिमुखता नामक दो सोपानों में एवं उत्तर परम्परागत स्तर को सामाजिक अनुबंध विधिसम्मत अभिमुखता तथा सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिमुखता नामक दो सोपानों में बांटा है।
- नैतिक विकास के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति का नैतिक चिंतन एवं उसके पीछे निहित तर्क भिन्न होते हैं।

---

#### 4.9 अपनी प्रगति की जांच करें :-

---



- नैतिक विकास का तात्पर्य क्या है?
- नैतिक विकास के क्या सिद्धांत हैं?
- कि गोरवस्था में नैतिक विकास की व्याख्या कीजिए।
- एक शिक्षक कोहलबर्ग के सिद्धांत का प्रयोग बालकों के नैतिक विकास के लिए कैसे कर सकता है?
- कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत की आलोचना की व्याख्या करें।

---

#### 4.10 अपनी प्रगति की जांच संबंधी उत्तर

---

1. नैतिकता का तात्पर्य सामाजिक समूह के नैतिक नियमों को स्वीकार करने से है। बच्चों में विकसित होने वाला नैतिक व्यवहार, विवास, मूल्य और सिद्धांत ही उनके माता-पिता तथा पारिवारिक परिवेश की देन है।
2. नैतिक विकास अनेक कारणों से प्रभावित होता है—
  - परिवार— बच्चों के लिए शिक्षा संस्कृति अनुपासन, शिष्टता आदि सभी विषयों की प्राथमिक पाठशाला परिवार है। परिवार के वातावरण का प्रमुख बालक के नैतिक विकास पर पड़ता है।
  - विद्यालय — बालक अपने परिवार से चारित्रिक और नैतिक गुणों को लेकर बीच रूप में विद्यालय में प्रवेश करता है।
  - बौद्धिक विकास— नैतिक विकास और बौद्धिक विकास में सापेक्षित संबंध होता है।
  - साथी समूह— मित्रों की संगति के नैतिक विकास पर पड़ता है।
  - मनोरंजन संबंधी कारक— अलील और गन्दे मनोरंजन के साधन बालकों के नैतिक विकास पर कुप्रभाव डालते हैं।

- समाज और संस्कृति – स्कूल और परिवार के अलावा सामान्य सामाजिक वातावरण भी बालक के नैतिक विकास को प्रभावित करता है।
3. कोहलबर्ग ने नैतिक विकास सिद्धांत को प्रमुख तीन स्तरों पर वर्गीकृत किया है।
- पूर्व नैतिक स्तर– 4 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक
  - परम्परागत नैतिक स्तर– 10 तथा 13 वर्षों तक
  - आत्म अंगीकृत नैतिक स्तर या उत्तर परम्परागत नैतिक स्तर – 13 वर्ष से प्रारम्भ होकर प्रौढ़ावस्था तक
4. वस्तु निश्चय प्रश्न
- (अ) पूर्व स्तर काल
- (ब) 4 वर्ष की आयु
- (स) मानसिक

#### 4.11 नियत कार्य/गतिविधियाँ

- विद्यालय में नैतिक विकास का प्रबंध किस प्रकार होना चाहिए।
- बालक के अच्छे चरित्र के निर्माण में शिक्षक तथा परिवार के सदस्य किस प्रकार योगदान दे सकते हैं।
- इस इकाई के पढ़ने से आपको जो नैतिक विकास संबंधी-ज्ञान मिलता है, उसका उपयोग आप किस प्रकार कर सकते हैं।

#### 4.12 चर्चा /स्पर्शटीकरण के बिन्दु:-

.....

.....

.....

.....

.....

#### 4.12.1 चर्चा के बिन्दु:—

.....

.....

.....

.....

.....

#### 4.12.2 स्पष्टीकरण के बिन्दु:—

---

#### 4.13 संदर्भ ग्रंथ:—

---

Allpart, F.H.,(1924) “Social Psychology”, Boston, Hofton Miffin.

Sandiford, P., (1938) “Foundations of Educational Psychology”, New York  
long mans, Greens Company.

Samual, Smiles Quoted by Pathak, P.D. (1973) “Educational Psychology”  
Agra Vinod Pustak Mandir.

